INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

(Study of attitude of higher secondary level students towards social change in modern times)

सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्रवक्ता,
विवेकानन्द कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
सहायक प्रवक्ता,
विवेकानन्द कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2023-61274666/IRJHIS2308013

सारांश:

आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन तेजी से हो रहा है, जिसका सीधा प्रभाव उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। विद्यार्थियों की आधुनिक तकनीकों, सोशल मीडियाऔर व्यक्तिगत स्थितियों के साथ जुड़ने की संभावना इन परिवर्तनों को और भी महत्वपूर्ण बना रही है। इसके परिणाम स्वरूप, विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रिया, सामाजिक अन्तःक्रिया और समाज की विचारधारा में विशेष परिवर्तन आ रहे हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर के बीच की कड़ी होते है तथा समाज को परिवर्तित करने एवं उन्हें जागरूक करने की पर्याप्त क्षमता होती है। अतः यदि इस स्तर के विद्यार्थियों को पर्याप्त निर्देशन एवं परामर्श प्राप्त हो तथा आधुनिकीकरण के उपकरणों से जुड़े हुए हो तो उनकी सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति अच्छी हो सकती है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने अलीगढ़ जनपद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों पर सर्वेक्षण विधि द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग करके सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया तथा निष्कर्षतः यह पाया कि छात्र-छात्राओं के बीच सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति समान है किन्तु शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में इस स्तर पर अन्तर दिखाई देता है।

मुख्य बिंदु : *उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, आधुनिक समाज सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति।*

प्रस्तावना :

आधुनिक युग में समाज और परिवर्तन के अविरल रिश्तों के कारण शिक्षा के महत्व और आदर्शों में परिवर्तन के साथ-साथ विद्यार्थियों की दृढ़ता और समय में अभिवृद्धि की आवश्यकता होती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को समाज में होने वाले सुधारों के प्रति सचेत रहना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इसके साथ ही, समय के साथ बदलते परिवेश में उनकी सोच, धारणाएँ और समाज के प्रति दृष्टिकोणों में भी विकास आवश्यक है।

सामाजिक परिवर्तन एक नियमित प्रक्रिया है जिसमें तकनीकी उन्नति, संवैधानिक एवं सामाजिक सुधार और सामाजिक जागरूकता के कारण समाज में आधुनिक दृष्टिकोण और मानसिकता की आवश्यकता होती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को इस अवस्था में समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने का अवसर मिलता है, जो उनकी सोच और संवेदनाओं को आकार देते हैं।

विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि किस प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी समाज में होने वाले परिवर्तनों को समझते हैं और उनके प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। यह अध्ययन विद्यार्थियों की सामाजिक जागरूकता और गहन चिन्तन की दिशा में उन्हें मदद कर सकता है, जिससे वे समाज के उत्थान में योगदान कर सकें।

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार, "उच्च माध्यमिक शिक्षा"वह शैक्षिक चरण है जो माध्यमिक शिक्षा के बाद आता है, आमतौर पर ग्रेड 11 और 12 को कवर करता है। शिक्षा के इस चरण का उद्देश्य छात्रों को अधिक विशिष्ट एवं आधुनिक शिक्षा प्रदान करना है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के बीच एक सेतु का काम करती है। शिक्षा के इस चरण का उद्देश्य आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान कौशल और विभिन्न विषयों की गहरी समझ को बढ़ावा देना है, जिससे छात्रों को उच्च शिक्षा, कुशल रोजगार या उद्यमिता के लिए तैयार किया जा सके। यह नीति व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर भी जोर देती है और शिक्षा के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के विकास को प्रोत्साहित करती है, जिससे छात्रों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए व्यापक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है,साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 माध्यमिक स्तर की शिक्षा में टीचर ट्रेनिंग, शिक्षकों के पेशेवर विकास और शैक्षिक प्रौद्योगिकी का सुधार करने के लिए भी नई प्राथमिकताएं निर्धारित करती है। इसके परिणामस्वरूप, माध्यमिक स्तर की शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावितता में सुधार होने की आशा है जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नयी दिशा की ओर ले जाएगा।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय समाज विविध और आदिकालिक धरोहर से युक्त है। प्राचीन भारत में वेदों, उपनिषदों और पुराणों के उत्कृष्ट आदर्शों ने धार्मिक और सामाजिक जीवन का निर्माण किया है। मध्यकाल में भारतीय समाज ने समृद्धि, संस्कृति और विज्ञान में श्रेष्ठता प्राप्त की, जिसमें गुप्त और मौर्य शासकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आधुनिक काल में, भारतीय समाज विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक उत्थानों के साथ बदला है। आज भारत एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभर रहाहै, जिसमें तकनीकी विकास, शिक्षा और कला के क्षेत्र में उन्नति दर्शायी जा रही है। आधुनिक भारतीय समाज समृद्धि, समानता और विविधता के मूल विचारों के साथ अग्रसर हो रहा है, जो समाजिक

सुधार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक परिवर्तन एक प्रक्रिया है जिसमें समाज की संरचनाओं, नैतिक मूल्यों, आदर्शों और संस्कृतियों में बदलाव आता है। यह समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों के परिवर्तन का परिणाम है। सामाजिक परिवर्तन के कारण मुख्य रूप से तकनीकी उन्नति, सामाजिक संघटन, राजनीतिक आंदोलन, आर्थिक परिवर्तन आदि शामिल होते हैं।*"सामाजिक परिवर्तन एक शब्द है जिसे किसी भी सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक ढांचे, सामाजिक अन्तःक्रिया या सामाजिक संगठन के किसी भी पहलू में विविधताओं या परिवर्तनों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।"* **(विलियम एफ. ऑगबर्न)**

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति के स्वभाव, परिप्रेक्ष्य या किसी विशेष वस्तु, स्थिति, व्यक्ति या समूह के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाती है। यह विश्वासों, भावनाओं, विचारों और व्यवहार की प्रवृत्ति का एक समुच्चय है जो दर्शाता हैकि कोई व्यक्ति अपने आसपास की दुनिया पर कैसे विश्वास करता है और कैसे प्रतिक्रिया करता है।"अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता है, जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया है।"**(फ्रीमेन)**

अध्ययन की आवश्यकता :

"उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"एक महत्वपूर्ण शोध समस्या है जो समाजशास्त्र और शिक्षा विज्ञान के क्षेत्र में गहराई से अन्वेषण की जा रही है।

आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन तेजी से हो रहा है, जिसका सीधा प्रभाव उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। विद्यार्थियों की आधुनिक तकनीकों, सोशल मीडिया, और व्यक्तिगत स्थितियों के साथ जुड़ने की संभावना इन परिवर्तनों को और भी महत्वपूर्ण बना रही है। इसके परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रिया, सामाजिक अन्तःक्रिया और समाज की विचारधारा में विशेष परिवर्तन आ रहे हैं।सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित अब तक बहुत से शोध कार्य हुए है जैसे; **पी.जी., डॉ जयाश्री (2016) ने "सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में अंधविश्वासी अभिवृत्तिः डिग्री स्तर पर विद्यार्थियों के बीच एक अध्ययन"** विषय पर शोध किया तथा अपने शोध में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि डिग्री स्तर पर विद्यार्थियों के लिए अंधविश्वासी अभिवृत्ति और सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति के बीच एक उच्च नकारात्मक सहसम्बन्ध है। यह अध्ययन समाज से तर्कहीन और अंधविश्वासी विश्वासपूर्णढ़ाँचे को खत्म करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

सिंह, संजीव कुमार (2018) ने "समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने हेतु जनसंचार एवं उसके साधन" अध्ययन में स्पष्ट किया कि जनसंचार समाज में प्रचार के मनोवैज्ञानिक आधारों पर प्रकाश डालता

है। इसमें संकेत, अभिवृत्ति, विश्वास एवं संवेग आदि की भूमिका प्रमुख होती है। इनको नियंत्रित करके समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।

आर्य, डॉ नवीन (2023) नेअपने लेख "सामाजिक परिवर्तन हेतु शिक्षा की उपादेयता'नामक अध्ययन में यह पायाकि शिक्षा को वांछित परिवर्तन लाने का एक सशक्त साधन स्वीकार किया जाये। शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके व्यक्तियों की रूचियों, विचारों, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों आदि में सकारात्मक परिवर्तन लाये जा सकते हैं।

"युवा और सामाजिक परिवर्तनः एक अध्ययन"और **"सामाजिक परिवर्तन और युवाः एक अध्ययन"** जैसी शोध पत्रिकाओं में युवा वर्ग के समाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति के प्रमुख कारण और प्रभावों का व्यापक विश्लेषण किया गया है।

उपर्युक्त अध्ययन सामाजिक परिर्वतन में जनसंचार की भूमिका तथा शिक्षा की प्रक्रिया एवं अंधविश्वासी प्रवृत्ति को दर्शाते है किन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन विषय को लेकर बहुत कम शोध पाये गये हैं। अतः इस अन्तराल को पूर्ण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा इस विषय का चयन किया गया जिससे विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति की गहराई, प्रकार और प्रभाव का विश्लेषण किया जा सके।

शोध प्रश्न :

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति कैसे दिखाई देती है?
2. आधुनिक समय के सामाजिक परिवर्तन के मुख्य कारण क्या हैं और इनका उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर कैसा प्रभाव पड़ता है?
3. विद्यार्थियों के सामाजिक दृष्टिकोण में हो रहे परिवर्तन के पीछे के कारण क्या हो सकते हैं, जैसे तकनीकी उन्नति, मीडिया के प्रभाव, शिक्षा की व्यवस्था, आदि?
4. विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन के प्रति उनकी शिक्षा और परिप्रेक्ष्य की क्या भूमिका हो सकती है?
5. सामाजिक परिवर्तन के प्रति विद्यार्थियों की धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मान्यताओं का क्या प्रभाव हो सकता है?

समस्या कथन- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण-

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी-उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जो कक्षा 11 व 12 में नामांकित है।

सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति- सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का तात्पर्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण से है। जिसमें विद्यार्थी समाज में

होने वाले परिवर्तन को किस प्रकार देखते है और क्या प्रतिक्रिया करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य-

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
7. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीणविद्यार्थियों के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना-

H01- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H02- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन-

1. प्रस्तुत अध्ययन को अलीगढ जनपद केहाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट बोर्ड से मान्यता प्राप्त सरकारी उच्चतर माध्यमिक स्तर केकक्षा 11 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल एक स्वनिर्मित उपकरण "सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति" का प्रयोग किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियो का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध विधि एंव प्रक्रिया-प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त चर-प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में "सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति" तथा परतंत्र चर के रूप में लिंग एंव क्षेत्रीयता का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या-अलीगढ़ में स्थित समस्त उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

न्यादर्श एंव न्यादर्शन तकनीकी-

न्यादर्श के रूप में अलीगढ़ जनपद के दो उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

अनुसंधान हेतु प्रयुक्त उपकरण-

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण "सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति" का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण में 30 कथन दिये गये हैं जिनका प्राप्तांक निर्धारित मापनी के आधार परनिर्धारित किया गया है। प्राप्तांक की सीमा 30 से 150 तक रखी गई है। पूर्णतःसहमत के लिए 5 अंक, सहमत के लिए 4 अंक, अनिश्चित के लिए 3 अंक, असहमत के लिए 2 अंक एवं पूर्णतः असहमत के लिए 1 अंक निर्धारित किया गया है। नकारात्मक प्रश्नों के लिए इसका विपरीत प्राप्तांक लिया गया है। प्रस्तुत उपकरण की विश्वसनीयता .78 तथा वैधता .68 मापी गई है। विश्वसनीयता के लिए अर्द्ध विच्छेदन विधि एवं वैधता के लिए विषयवस्तु विधि का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण-

आंकड़ों के संग्रहण के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के छात्रों से प्रश्नावली भरवाकर एकत्रित किया गया है तथा आंकड़ों का सारणीयन करके माध्य, प्रमाणिक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग करके परिकल्पना की सार्थकता ज्ञात की गई है।

परिकल्पना की सार्थकता-

परिकल्पना की सार्थकता के लिए माध्य, प्रमाणिक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जिसे निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है-

सारणी-1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का माध्य एवं प्रमाणिक विचलन

सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति	न्यादर्श का आकार	माध्य	प्रमाणिक विचलन
उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	100	109.5	11.9

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का माध्य एवं प्रमाणिक विचलन का ग्राफ

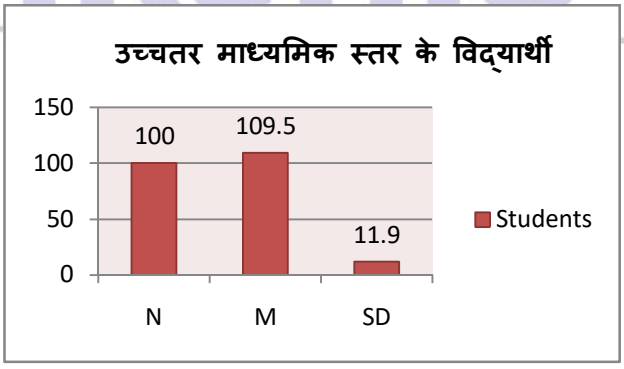

विश्लेषणः

उच्चतर माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया जिनका माध्यम 109.5 तथा प्रमाणिक विचलन 11.9 प्राप्त हुआ।

H01- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी-2

उच्चतर माध्यमिक छात्र-छात्राओं का माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं टी-मूल्य

सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति	न्यादर्श का आकार	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	50	109.06	12.2	0.37	0.05स्तर पर असार्थक
उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएँ	50	109.94	11.5		

उच्चतर माध्यमिक स्तर छात्र-छात्राओं का माध्य एवं प्रमाणिक विचलन का ग्राफ

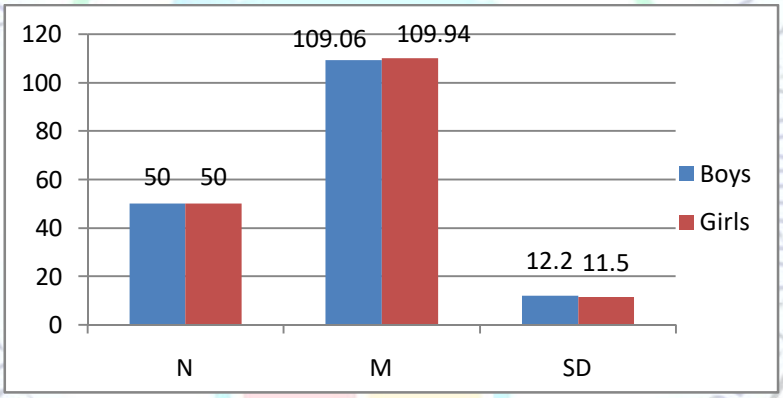

विश्लेषणः

सारणी संख्या 02 से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों का माध्य 109.06 तथा प्रमाणिक विचलन 12.2 प्राप्त हुआ तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं का माध्य 109.94 तथा प्रमाणिक विचलन 11.5 प्राप्त हुआ। छात्र एवं छात्राओं के मध्य टी-मूल्य की गणना की गयी जिसका मूल्य 0.37 प्राप्त हुआ जो सारणीमान 1.96 से 0.05 स्तर पर कम है। अतः शोधकर्ता द्वारा पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। माध्य स्तर पर दोनों चरों में अन्तर दिखायी देता है किन्तु सार्थक अन्तर नहीं दिखायी देता। इसका मुख्य कारण छात्र एवं छात्रा दोनों की सामाजिक परिवर्तन के प्रति समान अभिवृत्ति है तथा दोनों की सोच में कोई अन्तर नहीं है।

H02- उच्चतर माध्यमिक स्तर केशहरीएवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी-3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का माध्य, प्रमाणिक विचलन एवंटी-मूल्य

सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति	न्यादर्श का आकार	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थी	50	114.48	10.7	4.6	0.01 स्तर पर सार्थक
उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थी	50	104.52	10.9		

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का माध्य एवं प्रमाणिक विचलन का ग्राफ

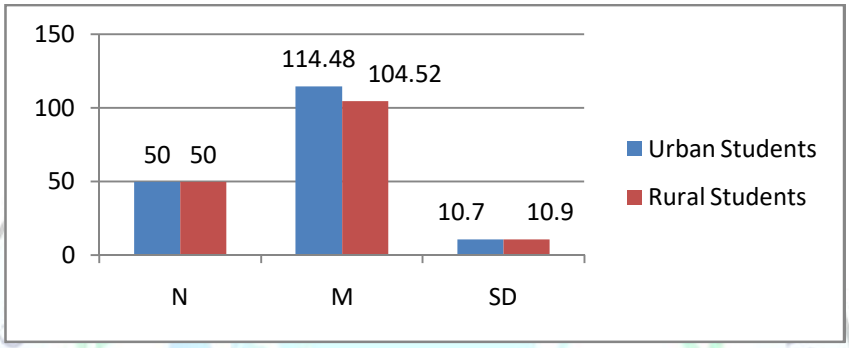

विश्लेषणः

सारणी संख्या 03 से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों का माध्य 114.48 तथा प्रमाणिक विचलन 10.7 प्राप्त हुआ तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर केग्रामीण विद्यार्थियों का माध्य 104.52 तथा प्रमाणिक विचलन 10.9 प्राप्त हुआ। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य टी-मूल्य की गणना की गयी जिसका मूल्य 4.6 प्राप्त हुआ जो सारणीमान 2.58 से 0.01 **सार्थकता**स्तर से अधिक है। अतः शोधकर्ता द्वारा पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। इसका मुख्य कारण शहरी विद्यार्थी आधुनिक तकनीकी तथा सोशल मीडिया से अधिक जुड़े होते है जिससे उनमें समाज की पुरानी कुरीतियों एवं अंधविश्वासों को दूर कर आधुनिक समाज निर्मित करने की क्षमता होती है। आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति शहरी विद्यार्थियों में अधिक दिखायी देती है। इसकी तुलना ग्रामीण विद्यार्थी संयुक्त परिवार में रहते हैं तथा उन्हें अपने बुजुर्गों की बातों का अनुसरण करना पड़ता है जिससे वे उनके ऊपर आधुनिकता का कम प्रभाव पड़ता है और सोशल मीडिया से भी कम जुड़े होने के कारण सामाजिक परिवर्तन के प्रति उनका दृष्टिकोण पिछड़ा रह जाता है तथा वे पुरानी परम्पराओं एवं मान्यताओं पर ही अधिक विश्वास करते हैं।

मुख्य प्राप्तियाँ: प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसके कारण पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति मेंसार्थक अन्तर पाया गया जिसके कारण पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गई। इसका मुख्य कारण शहरी विद्यार्थियों की आधुनिक समाज निर्मित करने की सोच को दिखाता है जबकि ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ी मानसिकता के दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष-

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर के बीच की कड़ी होते है तथा समाज को परिवर्तित करने एवं उन्हें जागरूक करने की पर्याप्त क्षमता होती है। अतः यदि इस स्तर के विद्यार्थियों को पर्याप्त निर्देशन एवं परामर्श प्राप्त हो तथा आधुनिकीकरण के उपकरणों से जुड़े हुए हो तो उनकी सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति अच्छी हो सकती है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने यह पाया कि छात्र-छात्राओं के बीच सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति तो समान है किन्तु शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में इस स्तर पर अन्तर दिखाई देता है।

भावी शोध के लिए सुझाव-

1. यह शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है जिसे माध्यमिक या उच्च शिक्षारत विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। न्यादर्श का आकार बड़ा करके भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध केवल अलीगढ़ जनपद तक सीमित है इसे पूरे प्रदेश या अन्य प्रदेशों की जनसंख्या को लेकर किया जा सकता है।

सन्दर्भ-

1. बुच, एम.बी. (2005) शोध सर्वेक्षण, दिल्ली प्रकाशन।
2. गुप्ता, एस.पी. (2018) अनुसंधान विधियाँ, शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. शर्मा, आर.ए. (2005) शिक्षा अनुसंधान, सूर्या प्रकाशन, मेरठ।
4. कपिल, एच.के. (2008) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. लाल, रमन बिहारी, (2011) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
6. पी.जी., डॉ. जयाश्री (2016) शोध पत्र "सामाजिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में अंधविश्वासी अभिवृत्तिः डिग्री स्तर पर विद्यार्थियों के बीच एक अध्ययन", PARIPEX-Indian Journal of Research, Vol 5, Issue 11, ISSN 2250-1991.
   Link:https://www.worldwidejournals.com/paripex/recent_issues_pdf/2016/November/superstitious-attitude-in-relation-to-attitude-towards-social-change--a-study-among-students-at-degree-level_November_2016_5902102016_9505778.pdf
7. सिंह, संजीव कुमार (2018) शोध पत्र "समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने हेतु जनसंचार एवं उसके साधन", International Journal of scientific Research in Science and

Technology, Vol 4, ISSUE 11, ISSN 2395-6011, online ISSN: 2395-602X. Link- https://ijsrst.com/paper/7266.pdf

8. आर्य, डॉ. नवीन (2023) शोध पत्र "सामाजिक परिवर्तन हेतु शिक्षा की उपादेयता", BHARTIYAM International Journal of Education & Research, Vol 12, ISSUE II, ISSN 2277-1255. Link-http://www.gangainstituteofeducation.com/research-paper-march-2023-4.pdf